ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14
Vol-5, No.-II,PP-1-3, YEAR-Dec.2016

बौद्ध और वेदान्त दर्शन

❑ महात्मा प्रवण कुमार चर्तुवेदी

भगवान बुद्ध का दर्षन आध्यामिक अद्वैतवाद या निरपेक्ष तत्त्ववाद है। उनके अनुसार परमतत्त्व निर्वाण है जो अतीन्द्रिय, निर्विकल्प और अनिवर्चयनीय है। स्वानुभूति या बोधि से इस दुःख रूप अविद्याजन्य संसारचक्र की निवृत्ति होती है। यह अद्वैववाद बुद्ध ने उपनिषद् हो लिया है।

बुद्ध का अनात्मवाद न तो लोकव्यवहार के प्रमाता का खण्डन करता है ओर न उपनिषद् के स्वतः सिद्ध निव्य चैतन्य है। यह अनात्मकवाद 'अहक्ङार–समकारयुक्त प्रमाता' की पारसार्थिक सत्ता का, बहुत्ववादी वस्तुवाद के 'जीवात्मा' का जिसे वह नित्य द्रव्य के रूप में अनेक मानता है, खण्डन करता है। उपनिषद् में नित्य स्वानुभूति के लिये 'आत्मा' या 'ब्रह्म' शब्दों का प्रयोग हुआ। स्वतः सिद्ध और स्वप्रकाश ज्ञान के लिये 'आत्मा' पद का प्रयोग और उसका ब्रह्म से तादात्म्य उपनिषद् के ऋषियों की दर्शन को एक महती देन है। महात्मा बुद्ध ने इस उपरोक्षानुभूति को 'आत्मा' की संज्ञा नहीं दी और वे 'आत्मा' शब्द के प्रमाता या जीव के अर्थ में ही लेकर उसकी तात्विक सत्ता का निषेध करते रहे। यही अनात्मवाद के विशय को भ्रान्ति का कारण बना। किन्तु बुद्ध ने उपरोक्षानुभूति के लिये 'निर्वाण' पद का प्रयोग किया। उपनिषद् के ऋषियों ने 'आत्मा' के लिये जिन विशषणों का प्रयोग किया है, लगभग उन सभी विशेषणों का प्रयोग महात्मा बुद्ध ने निर्वाण के लिये किया है। बुद्ध का आष्तह परम तत्त्व की निर्वचनीयता पर है और उन्होंने तत्त्व का प्रायः 'नेति नेति' द्वारा निषेधमुख से वर्णन किया है।

हीनयान के सम्प्रदायों ने भगवान बुद्ध के उपदेशों के मर्म को नहीं समझा और उन्होंने बुद्ध के उनित्यवाद को दार्शनिक क्षणभग्ङ के रूप मे परिणत कर दिया जिसके अनुसार क्षणिक परमाणु और क्षणिक विज्ञान ही तत्त्व हैं जो संस्कृत धर्म बुद्ध के लिये अनित्य, दुःख–रूप, अनात्म और मृषा थे, हीनयान ने उन क्षणिक धर्मों को सत्मान लिया और उन्हें स्कन्ध, आयतन तथा धातु के तानों–बानों में बुनता रहा। अतः हीनयान और वेदान्त में कोई समानता नहीं है।

माध्यमिक दर्शन और अद्वैत वेदान्त में काफी साम्य है। माध्यमिक दर्शन में भगवान बुद्ध के निरपेक्ष अद्वैतवाद का, जिसे उन्होंने अपनिषद् से ग्रहण किया था, पर्याटत विकास हुआ है। बुद्ध के समान माध्यमिक ने भी तत्त्व का वर्णन निषेध–मुख से किया है और तत्त्व के लिये निर्माण पद का प्रयोग किया है। तत्त्व चतुष्कोटिविनिर्मुक्त है और उसका साक्षात्कार निर्विकल्प बोधि, प्रज्ञा या अनुभूति से ही सम्भव है। नागार्जुन और चन्द्रकीर्ति के द्वन्द्वात्मक तर्क के आगे समस्त बुद्धि–ग्राह्म पदार्थ सदसद्विलक्षण और मृषा सिद्ध होते हैं। माध्यमिक दर्शन में द्वन्द्वात्मक तर्क की प्रसग्ङापादन शैली या पर्याप्त विकास हुआ है। इस तर्कपद्धति को गौडपादाचार्य और श्रीहर्ष ने सी अपनाया है। माध्यमिक के परमार्थ, तथ्य संवृति

प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास विभाग, एस0बी0 एम0 पी0 जी0 कालेज फाजिलनगर, कुशीनगर

ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14

और मिथ्यासंवृति, वेदान्त के परमार्थ, व्यवहार और प्रतिमास के समान हैं। माध्यमिक के अजातिवाद का अनुमोदन गौडपादाचार्य ने किया है। श्रीहर्ष ने स्पष्ट स्वीकार किया है कि माध्यमिक और वेदान्त के तर्कों पर खण्डन नहीं हो सकता तथा इन खण्डनों की सार्वपधीनता निर्बाध है।

माध्यमिक के अनुसार संसार और निर्वाण, बन्धन और मोक्ष वस्तुतः अभिन्न है। निर्वाण अविद्या–निरोध है, सर्वदृष्टिप्रहाता है, अशेषकल्पनाक्षय है, और यही प्रपञ्चोयशम शित्र अद्वैत तत्त्व हैं निर्वाणपूर्व समस्त लोक–व्यवहार संवृति–सत्य हैं निर्वाण अपरोक्षानुभूति है जिसे शून्यता, धर्मता और बोधि कहा जाता है। यही अभय और अमृत अद्वय परमार्थ है। इस माध्यमिक दश्नन का अद्वैत वेदान्त से साम्य स्पष्ट हैं

माध्यमिक और वेदान्त में मुख्य भेद यह है कि माध्यमिक ने परमतत्व को 'आत्मा' या 'नित्य स्वप्रकाश विज्ञान' संज्ञा से अभिहित नहीं किया। भगवान बुद्ध के समान माध्यमिक ने तत्त्व के लिए 'निति–नेति' का ही प्रयोग किया। माध्यमिक का आग्रह तत्त्व–साक्षात्कार पर है, तत्व के विधि मुख निरूपण पर नहीं है। नागार्जुन ने तत्त्व के अपर–प्रत्यय अर्थात् स्वानुभतिगम्य, शान्त, प्रपञ्शून्य, निर्विकल्प, अनानार्थ या भेद रहित बताया है। प्रतीत्यसमुत्पाद को उत्पत्ति–विनाश रहित, प्रपञ्चोपशस, और शिव कहा गया है। ये वर्णन आत्मा या ब्रह्म के वर्णन के समान हैं। यद्यपि निर्वाण या तत्त्व को स्पष्टरूप से 'आत्मा' 'विज्ञान' या 'आनन्द' नहीं कहा गया है, तथापि अर्थापत्ति से यही भाव निकालता है क्योंकि जो स्वानुभतिगम्य, प्रपञ्चोपशम और शिव है, वह विज्ञानानन्द स्वरूप ही हो सकता है। निर्वाण बोधि या प्रज्ञा है, यह तो माध्यमिक के निर्विवाद रूप से स्वीकार है।

गौडपादाचार्य ने माध्यमिक और वेदान्त की तुलना करते हुये उनके साम्य–वैषम्य का निर्देश किया है। श्रीहर्ष ने माध्यमिक और ब्रह्मवादी से भेद बताते हुए कहा है कि माध्यमिक (नित्य) विज्ञान तक को सदसद्विलक्षण मानता है। किन्तु माध्यमिक केवल क्षणिक विज्ञान का खण्डन करता है। जिसे वेदान्त की स्वप्रकाश न मानकर आत्मा द्वारा 'ज्ञेय' मानता हैं यह अवश्य है कि माध्यमिक ने स्पष्ट रूप से अपने निरपेक्ष तत्त्व को स्वप्रकाश नित्य विज्ञान या आत्मचैतन्य की संज्ञा नहीं दी है, यद्यपि उसका तात्पर्य इसी से है। तत्त्व के अनिर्वचनीय मानकर निषेध–मुख से ही उसका वर्णन करने के कारण यह हुआ है। वेदान्त भी 'नेति–नेति' द्वारा निषेध–मुख वर्णन की प्राधान्य देता है, तथापि व्यवहार में वेदान्त तत्त्व के विधानात्मक वर्णन को भी आवश्यक मानता है। वेदान्त के अनुसार स्वप्रकाश और स्वतः सिद्ध आत्म चैतन्य को स्वीकार किये बिना परमार्थ और व्यवहार की सिद्धि सम्भव नहीं है। इस विषय मे वेदान्त माध यमिक दश्नन से निःसन्देह श्रेष्ठ है। औपनिषद् अद्वैतवाद के विकास में माध्यमिक दर्शन पूर्वभूमि और वेदान्त दर्शन उत्तरभूमि है।

लंक्ङावतारसूत्र अपने तथागत गर्म में और वेदान्त के आत्मतत्त्व में साम्य परिलक्षित करता है एवं दोनों में भेद बताते हुए कहता है कि तथागतगर्म 'निर्विकल्प' और 'निराभास सज्ञागोचर' है, किन्तु अबौद्धों का आत्मा 'सत्' रूपी बुद्धिविकल्प से चिपका रहता है। परन्तु यह भेद असत्य है।

बौद्ध विज्ञानवाद और अद्वैत वेदान्त का मुख्य भेद यह माना जाता रहा है कि विज्ञानवाद के विज्ञान क्षणिक, अनेक और उत्पत्ति–विनाशशील हैं, जबकि अद्वैतवेदान्त आत्मचैतन्यस्वरूप विशुद्ध विज्ञान के नित्य, एक और अद्वैत मानता है। विज्ञानवाद परमार्थ और व्यवहार दोनरों में विज्ञानवाद स्वीकार करता है। अद्वैव वेदान्त परमार्थ में

ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14

विज्ञानवाद और व्यवहार में वस्तुवाद को मानता हैं पाश्चात्य दार्शनिक कान्ट ने भी यही दृष्टि अपनायी है।

व्यवहार में भी हमें अर्थाकार विज्ञानों का अनुभव होता है, पदार्थों का नहीं। इसी को व्यावहारिक विज्ञानवाद कहते हैं। वेदान्त इसका प्रबल विरोध करता है और मानता सम्प्रदाय में नहीं हैं। महायान के माध्यमिक और विज्ञानवाद सम्प्रदायों में ये श्रोत दार्शनिक सिद्धानत बुद्धोपदेश के रूप में ही आये और इनका विकास बौद्धों की अवैदिक धार्मिक परम्परा में हुआ, अतः महायान दर्शन और अद्वैत वेदान्त में इन औपनिषद् सिद्धान्तों के विकास में कुछ महत्वपूर्ण भेद आ जाना स्वाभाविक हैं इन सब कारणों से अद्वैत वेदान्त दर्शन की माध्यमिक और विज्ञानवाद दर्शन पर सर्वाग्डीण श्रेष्ठता स्पष्ट सिद्ध है।

सन्दर्भ

1. सम्मपद और सुत्तनिपात .....S.B.E. Vol.X
2. मिलिन्दपञहो – सम्पादक आर0डी0 वोडकर, बम्बई, 1940।
3. मूलमध्यमककारिका–नागार्जुन।
4. खण्डनखण्डखाद्व – श्रीहर्ष मिश्र।
5. वेदान्त सिद्धान्त–प्रकाशानन्द।
6. बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन–भरत सिंह उपाध्याय।
7. भारतीय दर्शन–चन्द्रधर शर्मा।